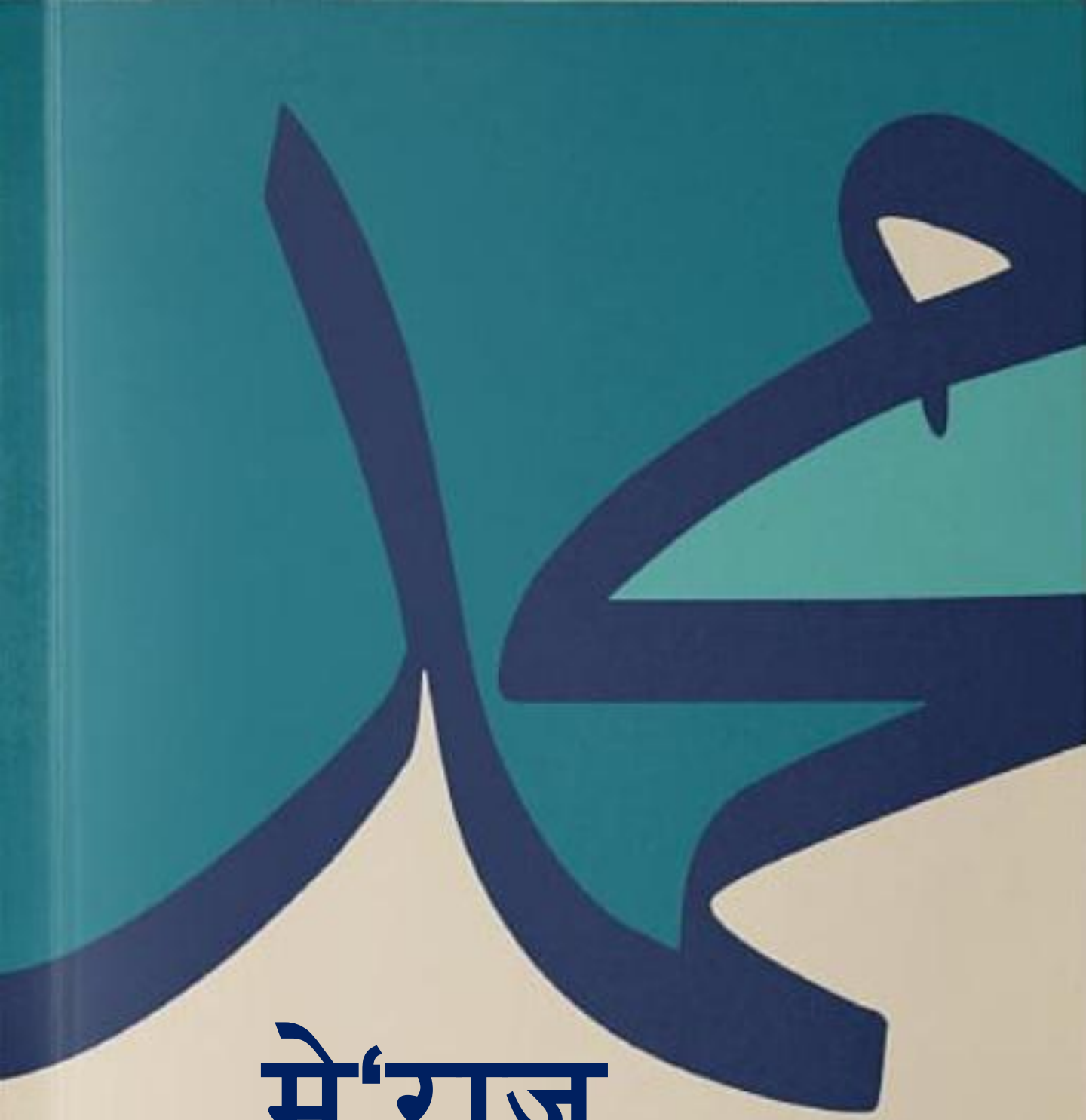

मे'राज

के वक़्त रसूल ﷺ की रूहानी हालत

एस. अहमद रहनमाई

अंग्रेजी तर्जुमा – Al-Islam.org
हिंदी तर्जुमा - HindiDuas.org

HindiDuas.org

बिअसत के वक़्त रसूल ﷺ की रूहानी कैफ़ियत

एस. अहमद रहनमाई

मज़मून पेज न०

दीबाचा (प्रस्तावना) 2

रिसालत कहाँ और कब वाक़े हुई 3

वह़ी की शुरुआत: सच्चा ख़्वाब या ह़क़ीक़ी रु'यत? 4

पहली वह़ी के वक़्त रसूल की नफ़्सियाती (मनोवैज्ञानिक) हालत 12

ख़ुलासा-ए-बह़स (सारांश टिप्पणियाँ) 13

मख़ज़न-ए-मआख़िज़ / किताबियात (ग्रंथ-सूची) 15

दीबाचा (प्रस्तावना)

यह लेख रसूल ﷺ की ज़िंदगी के उस हिस्से पर चर्चा करता है जिसमें रसूल ﷺ की रिसालत (अपोस्तलशिप) के तमाम मक़ासिद और उनकी तमाम तालीमात का निचोड़ मौजूद है। जो लोग नुबूवत के अक़ीदे पर ईमान रखते हैं, वे यह तस्लीम करते हैं कि यह एक इलाही फ़र्ज़ और ख़ुदा की तरफ़ से दी गई एक रसालत (मिशन) है। उनका मानना है कि अल्लाह ने यह ज़िम्मेदारी उन बंदों को अता की जिन्हें उसने अपने नेक बंदों में से चुना—उनमें से जो इंसानियत के दरमियान बुलंद मर्तबे वाले थे। वे यह भी मानते हैं कि अल्लाह ने अंबिया को इसलिए भेजा ताकि वे लोगों को हिकमत, इल्म व मआरिफ़त, और ख़ुशी व भलाई के रास्ते सिखाएँ।[1]

वही (Revelation) उन सबसे अहम बुनियादों में से है जिन पर दीनी सच्चाइयों, हक़ीक़तों और तालीमात का नज़रिया (इडियोलॉजी) तामीर होता है।[2] दूसरे अल्फ़ाज़ में, वही के ज़रिए "ख़ुदा अपने नबी को इस तरह तैयार करता है कि वह उससे आला तरीन कायनाती हक़ीक़तें हासिल करे, ताकि वह उन्हें इंसानियत तक पहुँचा सके।"[3] दोनों बातों का मफ़हूम यही है कि इस्लाम जैसे दीन की तमाम बुनियादी उसूल और तालीमात वही के रास्ते से आई होंगी।

मुस्लिम उलेमा और सीरत-निगारों का मानना है कि रसूल ﷺ की बिअसत (Mission) की शुरुआत उस वही से हुई जो अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते जिब्रईल के ज़रिए नाज़िल की।[4]

अगर यह बात सही है, तो रसूल ﷺ की बिअसत उनकी ज़िंदगी में अव्वल दर्जे की अहमियत रखती है। यह तमाम मुस्लिम सीरत-निगारों का आम अकीदा है, हालांकि आगे चलकर जैसा कि हम देखेंगे, बिअसत के मसले पर उनके नज़रियात में इख़्तिलाफ़ भी पाया जाता है। इस बहस में, सीरत-निगारों की नज़र से बिअसत के वक़्त रसूल ﷺ की रूहानी और नफ़्सियाती कैफ़ियत का जायज़ा लिया जाएगा। यहाँ दो पहलू खास तौर पर ज़ेरे-बहस रहेंगे:

1. बिअसत की तारीख़ — जो सुन्नी और शिया के दरमियान एक बहस है।
2. बिअसत के ख़ास हालात — जैसे नुबूवत की शुरुआत कैसे हुई: क्या नींद में या सच्चे मुशाहिदात/रूयाह के ज़रिए? क्या वही हासिल करते वक़्त रसूल ﷺ ख़ौफ़ से काँप उठे थे?

बिअसत कहाँ और कब हुई

हदीस और सीरत के मआख़िज़ के मुताबिक़ इसमें कोई शक नहीं कि मक्का के उत्तर में (क़रीब दो मील की दूरी पर) पहाड़ हिरा की ग़ार वही के पहले इलाही पैग़ाम के नुज़ूल की जगह थी।[5] ग़ार की मुकम्मल ख़ामोशी और मक्का से उसकी पूरी जुदाई ने इबादत और एतिकाफ़/तन्हाई के लिए एक आरामदेह जगह मुहैया की।[6] यह भी मुसल्लम है कि बिअसत उस वक़्त हुई जब हज़रत मुहम्मद ﷺ की उम्र चालीस साल थी।[7] कहा गया है: "जब मुहम्मद ﷺ अपनी उम्र के चालीसवें साल के क़रीब पहुँचे और ग़ार-ए-हिरा में एतिकाफ़/तन्हाई इख़्तियार की, तो उनकी रूह उस हक़ (सच्चाई) के मुशाहिदे पर पूरी तरह मुतमइन हो चुकी थी जिसे उन्होंने देखा था।"[8]

मजमूई तौर पर, अकसर सुन्नी इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि रसूल ﷺ की बिअसत रमज़ान के महीने में हुई,[9] लेकिन रमज़ान की कौन-सी तारीख़ थी—इस पर उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ है। तबरी और बाद में मजलिसी की रिवायत के मुताबिक़, जो लोग रमज़ान को तरजीह देते हैं, वे हदीस के तीन मजमूअों की बुनियाद पर तीन तारीख़ों में से किसी एक को चुनते हैं: सत्रहवीं, अठारहवीं, या चौबीसवीं। फिर कुछ और सुन्नी रिवायतें कहती हैं कि बिअसत रबीउल-अव्वल में हुई।[10]

अकसर सुन्नियों के बरअक्स, शिया मुहद्दिसीन और सीरत-निगारों ने—या मजलिसी के मुताबिक़, इस पर इत्तेफ़ाक़ (इज्मा') किया—कि बिअसत रजब की सत्ताइसवीं को हुई, यानी वही दिन और वही महीना बिअसत का है। यह राय कुछ सुन्नी रिवायतों में भी मिलती है।[11]

हम रजब की सत्ताइसवीं के हक़ में उस दलील को कबूल करते हैं जो अहले-बैत के इमामों से मनक़ूल है, क्योंकि रसूल ﷺ की औलाद और अहले-बैत, रसूल ﷺ के ज़ाती हालात और उनके अक़वाल को दूसरों से ज़्यादा जानते थे—यानी घर वाले ही बेहतर जानते हैं कि घर में क्या होता है। उनका बयान है कि बिअसत का एलान 27 रजब को हुआ। यही बात अकसरियत—या मजलिसी के बयान के मुताबिक़ शिया उलेमा के इत्तेफ़ाक़—से साबित है।

कोई यह भी कह सकता है कि इसमें कोई इशकाल नहीं कि रसूल ﷺ ने रजब में नुबूवत पाना शुरू की, ताकि बाद में रमज़ान में क़ुरआन के नुज़ूल की तैय्यारी हो सके। यह तैय्यारी ख़ुद क़ुरआन से समझ में आती है:

"यक़ीनन हम तुम पर एक भारी कलाम नाज़िल करेंगे।"[12]

चुनाँचे क़ुरआन रमज़ान में तदरीजन (धीरे-धीरे) नाज़िल हुआ। इस नतीजे की ताईद एक रिवायत से भी होती है जिसके मुताबिक़ क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले फ़रिश्ता-ए-वही रसूल ﷺ के पास आता और

अपने आपको उन्हें दिखाता था।[13] इसलिए बिअसत की शुरुआत (27 रजब) और पूरे क़ुरआन के नुज़ूल (रमज़ान) के दरमियान फ़र्क़ किया जा सकता है।

वही की शुरुआत: सच्चा ख़्वाब या सच्चा मुशाहिदा?

इब्न इस्हाक़[14] और इब्न कसीर[15] की मर्वियात पर एतमाद करते हुए कुछ सुन्नी विचारकों ने यह नतीजा निकाला है कि वही की शुरुआत रसूल ﷺ के उस ख़्वाब से हुई जो ग़ार-ए-हिरा में सोते हुए उन्हें आया। मिसाल के तौर पर हैकल कहता है: "एक दिन, जब मुहम्मद ﷺ ग़ार में सो रहे थे, एक फ़रिश्ता हाथ में एक परचा/चादर लिए क़रीब आया।" फ़रिश्ते ने मुहम्मद ﷺ से पढ़ने को कहा।[16]

ए. वेसल्स इस नुक्ते पर बात करते हुए कहता है: "हैकल के मुताबिक़, मुहम्मद ﷺ ने जो कुछ अपने 'ख़्वाब' में देखा, उस पर उन्हें पूरा भरोसा था।"[17] हैकल एक दूसरी इमकान की तरफ़ भी इशारा करता है, जिसे कुछ रावी-ए-हदीस बयान करते हैं। वह कहता है: "उनमें से कुछ ने दावा किया है कि वही की शुरुआत बेदारी के वक़्त हुई, और वे एक हदीस बयान करते हैं कि जिब्रईल ने पहली बार ज़ाहिर होकर मुहम्मद ﷺ के ख़ौफ़ को दूर करने के लिए इत्मिनान की बातें कहीं।"[18] फिर हैकल कहता है:

अपनी किताब अल-कामिल फ़ी-त-तारीख़ में,[19] इब्न कसीर ने अबू नुऐम अल-इस्बहानी की किताब दलाइल-उन-नुबूव्वह से एक नक़्ल पेश की, जिसमें उन्होंने रिवायत किया कि 'अलक़मा बिन क़ैस ने कहा: "अंबिया पर पहली वहियाँ उनके ख़्वाब में आती थीं, यहाँ तक कि उनके दिल मुतमइन हो जाते।"[20]

यह नुक्ता बुख़ारी ने भी बयान किया है। वही की शुरुआत के बारे में उसने कुछ अहादीस रिवायत की हैं, जिनमें से एक यह है: "अल्लाह के रसूल ﷺ पर वही की इब्तिदा अच्छे ख़्वाबों की सूरत में हुई जो रोशनी वाले दिन की तरह (यानी सच्चे) आते थे..."[21]

शिया विचारकों के नज़दीक यह बात बिल्कुल वाज़ेह है कि पहली वही उस वक़्त हुई जब रसूल ﷺ ग़ार में नमाज़/इबादत में मशग़ूल थे। यह वही रसूल ﷺ पर उनकी मुकम्मल होशियारी की हालत में नाज़िल हुई, और अल्लाह तआला के इन अल्फ़ाज़ से शुरू हुई:

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है। पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। जिसने इंसान को जमे हुए ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।"[22]

यही बात अहले-बैत के इमामों और दूसरों से भी मनक़ूल है।[23]

पहली वही के वक़्त रसूल ﷺ की नफ़्सियाती कैफ़ियत

इब्न इस्हाक़ और दूसरे सुन्नी मुहद्दिसीन व सीरत-निगार पहली वही के वक़्त रसूल ﷺ की हालत बयान करते हैं।[24] मिसाल के तौर पर, हैकल इस वाक़िये को इस तरह बयान करता है:

ख़ौफ़ और दहशत से घिरकर मुहम्मद ﷺ उठ खड़े हुए और अपने आप से पूछा: "मैंने क्या देखा? क्या वह शैतानी असर, जिससे मैं पहले ही डरता था, मुझ पर छा गया है?" मुहम्मद ﷺ ने दाएँ और बाएँ देखा, मगर कुछ नज़र न आया। कुछ देर तक वे वहीं खड़े रहे—डर से काँपते हुए और हैरत में डूबे हुए। उन्हें ख़ौफ़ हुआ कि कहीं यह ग़ार किसी साया या जिन्न से आबाद न हो, और यह भी डर था कि वे भाग निकलें जबकि जो कुछ देखा है, उसे समझा भी नहीं जा सका। वे पहाड़ के आस-पास चलते रहे और अपने आप से सवाल करते रहे कि आख़िर वह कौन था जिसने उन्हें "पढ़ने" का हुक्म दिया था...

वह कौन था जिसने मुहम्मद ﷺ को ख़ुदा की याद दिलाई—कि उसी ने इंसान को पैदा किया, और वही सबसे बड़ा करीम है जिसने इंसान को क़लम के ज़रिए वह सिखाया जो वह नहीं जानता? अपने ही सवालों में उलझे हुए, और ग़ार में देखी-सुनी बातों के ख़ौफ़ से अब भी काँपते हुए, मुहम्मद ﷺ रास्ते के बीच ठहर गए, जब वही आवाज़ ऊपर से उन्हें पुकारने लगी। अपनी जगह जैसे जकड़े हुए, मुहम्मद ﷺ ने आसमान की तरफ़ सर उठाया।

उन्होंने आसमान में एक बहुत बड़े इंसानी रूप वाले फ़रिश्ते को देखा। एक लम्हे के लिए उन्होंने भागने की कोशिश की, मगर जिधर भी देखते या दौड़ते, वही फ़रिश्ता उनके सामने मौजूद रहता। ... जब फ़रिश्ता ग़ायब हुआ, तो मुहम्मद ﷺ घर लौट आए। उनकी हालत बेहद दहशतज़दा थी। ... घर में दाख़िल होते ही उन्होंने ख़दीजा से कहा कि उन्हें कम्बलों में लपेट दें। ख़दीजा ने देखा कि उनके शौहर ऐसे काँप रहे हैं जैसे तेज़ बुख़ार में हों। जब वे कुछ सँभले, तो उन्होंने अपनी बीवी की तरफ़ ऐसे देखा जैसे कोई मदद का तलबगार हो।[25]

क़दीम (पुराने) नुस्ख़ों में रसूल ﷺ की जो तस्वीर पेश की गई है, उस पर सुन्नी सीरत-निगारों ने न तो कोई तंज़ीद की है और न ही कोई तब्सिरा। शिया आलिम जाफ़र सुब्हानी[26] अपनी किताब में कहते हैं कि यह हैरत की बात है कि डॉ. हैकल, अपनी किताब की मज़बूत और सोच-समझकर लिखी गई प्रस्तावना के बावजूद, उन्हीं मनगढ़ंत रिवायतों को बयान करते हैं जो क़दीम हदीस और सीरत की किताबों में पाई जाती हैं। हैकल का ख़याल था कि रसूल ﷺ से मंसूब बहुत-सी तोहमतें और झूठ नाइंसाफ़ी से जोड़े गए हैं, इसलिए उन्होंने सीरत की तस्वीर को इन बदनामियों से पाक करने की कोशिश की।[27]

जैसा कि वेसल्स इशारा करता है:

“वे मुहम्मद ﷺ की ऐसी तस्वीर पेश करना चाहते थे जो ख़ास तौर पर आधुनिक, तालीम-याफ़्ता मुसलमानों को क़ाबिले-क़बूल लगे—जो उनके नज़दीक अपनी जड़ों और विरासत की तरफ़ लौटने के मुहताज थे।”[28]

इसके अलावा, रसूल ﷺ पर कुछ मुस्तशरिक़ीन (ओरिएंटलिस्ट्स) की तरफ़ से लगाए गए मिर्गी (एपिलेप्सी) के इल्ज़ाम को रद्द करते हुए, हैकल अपनी किताब के दूसरे एडिशन की प्रस्तावना में—बिअसत के बाब से पहले—ज़ोर देकर कहते हैं:

वही के लम्हे में रसूल ﷺ की हालत ऐसी बिल्कुल नहीं थी; बल्कि उस वक़्त उनकी ज़ेहनी और अक़्ली क़ुव्वतें कमज़ोर होने के बजाय और ज़्यादा मज़बूत हो जाया करती थीं—इतनी कि उनके जानने वालों ने पहले कभी ऐसी मिसाल नहीं देखी थी। मुहम्मद ﷺ वही के ज़रिए मिलने वाली हर बात को पूरी दक़्क़त और याददाश्त के साथ महफ़ूज़ रखते थे...[29]

हैकल आगे कहते हैं:

[बिअसत से पहले] मुहम्मद ﷺ अपने ख़्वाबों में उस हक़ीक़त के मुशाहिदात देखने लगे जिसकी वे तलाश में थे। इन मुशाहिदात के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी की नापायेदारी और उसकी साज-सज्जा की बे-मायगी और ज़्यादा वाज़ेह हो गई। वे इस बात पर पूरी तरह मुतमइन हो चुके थे कि उनकी क़ौम पूरी तरह गुमराही में भटक चुकी है और उनकी रूहानी ज़िंदगी बुतों और उनसे जुड़ी ग़लत अक़ीदों की वजह से बिगड़ चुकी है। उन्हें यह भी यक़ीन हो गया था कि न यहूदी और न ही ईसाई, उनकी क़ौम को इस गुमराही से निकालने के लिए कुछ पेश कर सकते हैं।[30]

इस तरह, मुहम्मद ﷺ के ख़्वाबों ने उन्हें उस सच्चाई की जानकारी दी जिसकी वे तलाश कर रहे थे, और नतीजतन उन्हें पूरा यक़ीन हो गया कि उनकी क़ौम को एक नजात देने वाले की ज़रूरत है—जो कि उनके ख़याल में वही ख़ुद थे।

लेकिन ऊपर बयान किए गए ये हवाले उस तस्वीर से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हैं जो हैकल ने बिअसत की शुरुआत में रसूल ﷺ की ज़ेहनी हालत के बारे में पेश की है। हैकल के बयान के मुताबिक़, नुबूवत हासिल करते वक़्त मुहम्मद ﷺ एक ऐसे वजूद से हैरान और परेशान थे जो उन्हें अजनबी और डरावना महसूस हुआ। यहाँ रसूल ﷺ पहली वही के सामने असहज नज़र आते हैं—जैसे वे रूहानी बेचैनी और इज़्तिराब के एक सख़्त दौर से गुज़र रहे हों। इस नज़रिए से देखें तो रसूल ﷺ एक ऐसे इंसान मालूम होते हैं जो अनिश्चित, परेशान, उदास और हैरान थे; जो डर से काँप रहे थे और जिन्हें किसी के सहारे की

ज़रूरत थी—मुमकिन है कि वह सहारा उनकी बीवी ख़दीजा या उनके रिश्तेदार वरक़ा का रहा हो। ऐसी रिवायतें रसूल ﷺ के अपने आपको नाकाफ़ी समझने, उनके शक और ख़ौफ़, और उनकी रिसालत की मुश्किलों की तस्वीर पेश करती हैं।[31]

इसके अलावा, बुख़ारी अपनी सहीह में बयान करता है कि पहली वही की कहानी उस रिवायत से शुरू होती है जो अल-ज़ुहरी के हवाले से उरवा बिन ज़ुबैर से, और वह हज़रत आइशा से बयान की गई है। उन्होंने कहा:

"अल्लाह के रसूल ﷺ पर वही की शुरुआत अच्छे ख़्वाबों की सूरत में हुई, जो रोशन दिन की तरह (यानी बिल्कुल सच्चे) होते थे, और उन्हें तन्हाई पसंद आने लगी। वे ग़ार-ए-हिरा में तन्हा रहते और कई दिनों तक वहाँ इबादत करते, यहाँ तक कि अचानक वही उन पर नाज़िल हुई, जबकि वे ग़ार-ए-हिरा में थे। फ़रिश्ता उनके पास आया और उनसे कहा: 'पढ़ो।' रसूल ﷺ ने फ़रमाया: 'मैं पढ़ना नहीं जानता।'"[32]

इस रिवायत के मुताबिक़, यह वाक़िया तीन बार हुआ; हर बार फ़रिश्ता मुहम्मद ﷺ को ज़ोर से पकड़ता और इतना दबाता कि वे सहन न कर पाते। फिर छोड़ देता और दोबारा पढ़ने को कहता, और रसूल ﷺ वही जवाब देते: "मैं पढ़ना नहीं जानता।" आख़िरकार फ़रिश्ते ने कहा…

"पढ़ो, अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को एक जमे हुए ख़ून से पैदा किया। पढ़ो! और तुम्हारा रब सबसे ज़्यादा करीम है।"[33]

हज़रत आइशा आगे बयान करती हैं कि फिर अल्लाह के रसूल ﷺ वही लेकर लौटे, इस हालत में कि उनका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। फिर वे ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद के पास गए और कहा: "मुझे ढाँप लो! मुझे ढाँप लो!" ख़दीजा ने उन्हें ओढ़ा दिया, यहाँ तक कि उनका डर जाता रहा। इसके बाद उन्होंने ख़दीजा को वह सब कुछ बता दिया जो उनके साथ पेश आया था और कहा: "मुझे डर है कि कहीं मेरे साथ कुछ हो न जाए।" ख़दीजा ने जवाब दिया: "हरगिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम, अल्लाह आपको कभी रुस्वा नहीं करेगा…"

फिर ख़दीजा उन्हें अपने कज़िन वरक़ा बिन नौफ़ल बिन अब्दुल उज़्ज़ा के पास ले गईं, जो इस्लाम से पहले के दौर में ईसाई हो चुके थे और इब्रानी लिपि में लिखा करते थे। … अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन्हें वह सब कुछ बयान किया जो उन्होंने देखा था। वरक़ा ने कहा: "यह वही है… (जिब्रईल) जिसे अल्लाह ने मूसा के पास भेजा था।"[34]

हैकल और कुछ दूसरे सुन्नी उलमा की बयान की गई बातों के बिल्कुल ख़िलाफ़, शिया तशरीह में उन तमाम हालात के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाती जो पहली वही के वक़्त रसूल ﷺ से मंसूब किए

जाते हैं। बल्कि इस पर ज़ोर दिया जाता है कि वही उस वक़्त नाज़िल हुई जब रसूल ﷺ पूरी तरह होश और आगाही में थे। उन्होंने जो कुछ हो रहा था उसे बिना किसी डर या शक के देखा और समझा।

बिअसत की शुरुआत से मुतअल्लिक़ कुछ और रिवायतें भी मौजूद हैं; लेकिन वे सभी लफ़्ज़ी और मफ़हूमी दोनों पहलुओं से एक-दूसरे से टकराती हैं। इन रिवायतों का एक मुश्तरका ख़याल यह है कि वे ख़दीजा, उनके कज़िन वरक़ा और कुछ दूसरे राहिबों—जैसे अद्दास, नस्तूर और बहीरा—की भूमिकाओं को बयान करती हैं। वे यह दिखाती हैं कि ये राहिब, ख़ास तौर पर वरक़ा, मुहम्मद ﷺ की नुबूवत की तस्दीक़ और ताईद में किस तरह अहम किरदार अदा करते हैं।

ऐसी रिवायतों का जायज़ा कई पहलुओं से लिया जा सकता है:

1- रिवायत की सनद का विवादास्पद होना:
इन सनदों में जिन शख़्सियतों को अहमियत दी जाती है, उनमें अल-ज़ुहरी और उरवा बिन ज़ुबैर जैसे लोग शामिल हैं।[35] अल-ज़ुहरी बनी उमय्या की हुकूमत के हिमायती थे, जिन पर वे भरोसा करते थे। वे हिशाम बिन अब्दुल मलिक के दरबार में मौजूद रहे और उनके कातिब (लिपिक) और उनके बच्चों के शिक्षक के तौर पर काम करते थे।[36] उरवा बिन ज़ुबैर ताबेईन में से थे, जिन्होंने रसूल ﷺ को नहीं देखा, बल्कि उनके कुछ सहाबा को देखा था। उनके भी बनी उमय्या से क़रीबी ताल्लुक़ात थे।[37]

इसके अलावा, यह भी साबित नहीं है कि अल-ज़ुहरी ने उरवा से रिवायत की हो, हालाँकि कुछ मुहद्दिसीन ने इसे स्वीकार किया है।[38] यह बात भी क़ाबिले-तवज्जो है कि इन ज़्यादातर रिवायतों की सनद में हज़रत आइशा पहला नाम हैं, जिनसे आगे सब रिवायत करते हैं। जबकि हक़ीक़त यह है कि उनका जन्म बिअसत के कई साल बाद हुआ था; इसलिए वे बिअसत की शुरुआत के वाक़िआत की सीधे तौर पर बयान करने वाली नहीं हो सकतीं। दूसरे लफ़्ज़ों में, उन्हें किसी और से रिवायत करनी चाहिए थी, जिसका नाम ज़िक्र नहीं किया गया। इसलिए ऊपर दी गई रिवायत को "मुरसल" कहा जाएगा—यानी ऐसी हदीस जिसमें पहली कड़ी मौजूद न हो।[39] इस क़िस्म की रिवायत की हैसियत आम तौर पर उस सहीह रिवायत से कम होती है जिसकी सारी सनदें मालूम और क़ाबिले-क़ुबूल हों।[40]

2- तमाम रिवायतों में आपसी तज़ाद:
ये रिवायतें लफ़्ज़ी और मफ़हूमी दोनों सतहों पर एक-दूसरे से कम या ज़्यादा मुख़ालिफ़ हैं। यह तज़ाद और बे-रब्ती इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि जानबूझकर कुछ मनगढ़ंत क़िस्से गढ़े गए और उन्हें हज़रत आइशा जैसी अहम शख़्सियत से मंसूब कर दिया गया।[41] यह अमल बनी उमय्या ने सियासी मक़ासिद के तहत किया, जैसा कि रसूल ﷺ और उनके अहल-ए-बैत के साथ उनके बर्ताव से ज़ाहिर होता है।[42]

3- जिब्रईल और रसूल ﷺ को डराना:

यह समझ में नहीं आता कि जिब्रईल को रसूल ﷺ को डराने की क्या ज़रूरत थी। फ़रिश्ता क्यों उन्हें इतनी परेशानी और दबाव में डालता कि वे यह गुमान करने लगें कि अब उनकी मौत हो जाएगी? जब उसने देखा कि मुहम्मद ﷺ उस हुक्म को पूरा करने की क़ाबिलियत नहीं रखते, तो फिर उसने सख़्ती और बे-रहमी क्यों दिखाई?

4- राहिबों और ख़दीजा की भूमिका:

जब कोई तहक़ीक़ करने वाला रसूल ﷺ की बीवी और वरक़ा (या दूसरों) की भूमिका पर ग़ौर करता है, तो दो सवाल सामने आते हैं:

(अ) कोई शख़्स अल्लाह का नबी कैसे हो सकता है जबकि वह अपनी नुबूवत और मिशन से ख़ुद बेख़बर हो, और उसे एक औरत या कुछ राहिबों की मदद और तसल्ली की ज़रूरत पड़े? क्या ये मददगार उस डरपोक और मुतरद्दिद इंसान से ज़्यादा नुबूवत के हक़दार नहीं थे? वह वही हक़ीक़तें क्यों न पहचान सका जो इस औरत और इस राहिब ने पहचान लीं?[43]

इन मुतज़ाद दावों में तालमेल कैसे बैठाया जाए? एक तरफ़ यह कहा जाता है कि "अल्लाह के रसूल ﷺ पर वही की शुरुआत अच्छे ख़्वाबों की शक्ल में हुई, जो रोशन दिन की तरह सच्चे थे।"[44] मिसाल के तौर पर इब्न इस्हाक़ बयान करते हैं कि "... रसूल ﷺ को दी गई नुबूवत की पहली निशानी सच्चे ख़्वाब थे, जो सुबह की रौशनी जैसे थे और जो उन्हें नींद में दिखाए गए।"[45] एक दूसरी हदीस के मुताबिक़, जब अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को नुबूवत देने का इरादा फ़रमाया, तो वे अपने कामों और सफ़र के लिए निकलते थे, और जिस पत्थर या दरख़्त के पास से गुज़रते, वह कहता: "ऐ अल्लाह के रसूल! तुम पर सलाम हो।"[46]

लेकिन दूसरी तरफ़, कुछ मुहद्दिसीन और सीरत-निगार रसूल ﷺ की ऐसी तस्वीर पेश करते हैं जिसमें वे वही के वक़्त शक, हैरत, नादानी और घबराहट में नज़र आते हैं। इन दोनों किस्म की रिवायतों के बीच तज़ाद को दूर करने की कोशिश कोई नहीं करता।

(ब) क़ुरआन की कुछ आयात यह बताती हैं कि अल्लाह ख़ुद अपने रसूल और मोमिनों के दिलों को मज़बूत करता है।

कह दो: **"रूहुल-क़ुदुस इसे तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ लेकर नाज़िल हुआ है, ताकि ईमान लाने वालों के दिलों को मज़बूती दे, और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी बने।"[47]

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे कहते हैं: **"क़ुरआन उस पर एक ही बार में क्यों नाज़िल नहीं किया गया?"** (ऐसा) **इसलिए किया गया ताकि इसके ज़रिए तुम्हारे दिल को मज़बूती दी जाए; और हमने इसे ठहर-ठहर कर नाज़िल किया।**[48]

और ऐसी दूसरी आयात भी मौजूद हैं जो इस बात की तरफ़ इशारा करती हैं कि नबी अपने रब की तरफ़ से दलील पर क़ायम थे।

कह दो: **"मैं अपने रब की तरफ़ से दलील पर क़ायम हूँ, जबकि तुमने उसे झुठला दिया है। जिस चीज़ की तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास नहीं; हुक्म तो सिर्फ़ अल्लाह का है। वही हक़ बयान करता है और वही सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।"[49]**

कह दो: **"यही मेरा रास्ता है। मैं और जो मेरी पैरवी करता है, बसीरत के साथ अल्लाह की तरफ़ दावत देते हैं। अल्लाह पाक है, और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ।"[50]**

इस तरह नुबूवत और क़ुरआन का नाज़िल होना नबी ﷺ और मोमिनों के दिलों को मज़बूत करने वाला नज़र आता है। यह उस इल्ज़ाम के बिल्कुल ख़िलाफ़ है कि रसूल ﷺ का दिल वरक़ा की तसल्ली पर भरोसा करके सुकून पाया था।[51]

लेकिन हक़ीक़त क्या है? इस सवाल का जवाब देते हुए, सहीह रिवायतों और अक़्ली दलीलों की बुनियाद पर हम यह कहते हैं कि अल्लाह ने पहली वही रसूल ﷺ पर उस वक़्त नाज़िल की जब वे ग़ार में थे। फिर वे पूरे इत्मिनान के साथ अपने घर लौटे और उस ख़ुशख़बरी पर ख़ुशी ज़ाहिर की जो अल्लाह ने उन्हें अता की थी। वे उस अज़ीम ज़िम्मेदारी के बारे में पूरी तरह यक़ीन रखते थे जो उन्हें सौंपी गई थी। पहली वही के बाद जब वे घर आए और अपनी बीवी ख़दीजा से यह ख़बर बयान की, तो उन्होंने उन पर और उस पैग़ाम पर ईमान लाया जो वे लाए थे।[52]

इब्न कसीर की एक हदीस ऐसी है जो आम तौर पर शिया नज़रिये के ज़्यादा क़रीब मालूम होती है। इब्न कसीर बयान करते हैं कि रसूल ﷺ अपने घर वालों के पास इस यक़ीन के साथ लौटे कि उन्हें एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने ख़दीजा से वह सब कुछ बयान किया जो उन्होंने देखा था, और बताया कि जिब्रईल वाक़ई उनके पास आए थे और उन्हें अपने रब की तरफ़ से नुबूवत अता हुई थी। इस पर ख़दीजा ने कहा: **"ख़ुश हो जाओ! अल्लाह की क़सम, अल्लाह तुम्हारे साथ भलाई ही करता है। यह यक़ीनन हक़ है; ख़ुश हो जाओ! तुम यक़ीनन अल्लाह के रसूल हो।"**[53]

इमाम सादिक़[54] ने फ़रमाया कि अल्लाह सबसे पहले अपने बंदों में से एक को अपना रसूल चुनता है। फिर वह उस पर अपनी सकीनत, इत्मिनान, वक़ार और अज़मत नाज़िल करता है, ताकि वह जान ले कि जो कुछ उसके पास आया है वह यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ से है, शैतान की तरफ़ से नहीं; और यह वैसा ही हक़ीक़ी होगा जैसा वह अपनी आँखों से देखता है।[55]

उसी इमाम से यह सवाल किया गया कि अंबिया कैसे पहचानते हैं कि वे अल्लाह के रसूल हैं? उन्होंने जवाब दिया कि उनकी बिअसत के वक़्त अल्लाह उनकी आँखों और बसीरत से हर पर्दा हटा देता है। इस तरह वे हक़ को देख लेते हैं और उसे बातिल से अलग पहचान लेते हैं।[56] इसके अलावा तबर्सी कहते हैं कि अल्लाह अपने रसूल पर वही सिर्फ़ रौशन और नुमाया दलीलों और वाज़ेह निशानियों के साथ नाज़िल करता है, जो इस बात को साबित करती हैं कि यह वही अल्लाह तआला की तरफ़ से है। इसलिए रसूल ﷺ को कभी किसी दूसरे की रहनुमाई की ज़रूरत नहीं पड़ी।[57]

ख़ुलासा यह कि शिया नज़रिये से, पहली वही की वजह से रसूल ﷺ को न तो कोई डर था और न ही कोई बेचैनी।

ख़ुलासाती टिप्पणियाँ

1. हमने यह जाना कि सुन्नी और शिया मुफ़क्किरीन आम तौर पर बिअसत की सिफ़ात और अहलियत के मामले में दो अलग-अलग नज़रियों पर क़ायम हैं।[58] इसलिए इस इख़्तिलाफ़ को सुन्नी–शिया विवाद कहा जा सकता है।

2. जैसा कि हमने देखा, सुन्नी तसव्वुर के मुताबिक़ रसूल ﷺ की शख़्सियत की तस्वीर पर कोई आँच नहीं आती अगर उनसे कुछ डर, नादानी, बेचैनी और शक मंसूब किया जाए। यानी मुहम्मद ﷺ की ज़िंदगी एक इंसानी ज़िंदगी थी, और वे दूसरे इंसानों की तरह एक आम इंसान थे, बस फ़र्क़ यह था कि वही उन पर नाज़िल हुई।
“दूसरे इंसानों की तरह अंबिया भी इंसानी कमज़ोरियों से ख़ाली नहीं होते; उनकी इम्तियाज़ी ख़ूबी यह है कि अल्लाह उन्हें उनकी ग़लती पर छोड़ता नहीं, बल्कि उनकी इस्लाह करता है और कभी-कभी उन्हें मलामत भी करता है।”[59]

3. इसके बरअक्स, शिया यह अक़ीदा रखते हैं कि अल्लाह ने कभी अपनी इलाही वही किसी ऐसे बंदे पर नाज़िल नहीं की जो नाक़िस और ग़लती करने वाला हो; बल्कि उसने उसी को चुना जिसे उसने शुरू से ही पाक और मुतहर कर दिया। इसी बुनियाद पर वे यह मानते हैं कि नबी मुहम्मद ﷺ अगरचे ज़ाहिर में दूसरे इंसानों की तरह इंसान थे, लेकिन हक़ीक़त में वे अल्लाह के बुलंद मक़ाम और मासूम बंदे थे। शिया रिवायत में नबी ﷺ की शख़्सियत से हर तरह की कमी और ग़लती को ख़ास तौर पर बिअसत के शुरू में, पूरी तरह दूर कर दिया गया है; क्योंकि अल्लाह का रसूल मासूम होना चाहिए। इसी वजह से शिया उन तमाम नुक़्सानों को क़बूल नहीं करते जो नबी ﷺ से मंसूब किए जाते हैं। शिया मुतकल्लिम मुज़फ़्फ़र कहते हैं:

“नबी के लिए इस्मत (मासूमियत) ज़रूरी होने की वजह यह है कि अगर वह गुनाह करे, ग़लती करे या भूल जाए, तो हमारे सामने दो ही रास्ते बचते हैं: या तो हम उसकी ग़लतियों की पैरवी करें—जो इस्लाम की नज़र में ग़लत है—या हम उसकी बात न मानें, जो भी ग़लत है; क्योंकि अगर उसकी हर बात और हर अमल सही या ग़लत होने की संभावना रखता हो, तो उसका पालन करना नामुमकिन हो जाता है। नतीजा यह निकलता है कि उसकी बिअसत का मक़सद ही ज़ाया हो जाता है और नबी आम लोगों जैसा बन जाता है, जिनकी बात और अमल में वह बेहतरीन क़ीमत नहीं होती जिसकी हमें तलाश है।”[60]

किताबियात (ग्रंथ-सूची)

1. अल-क़ुरआन।

2. बुख़ारी, अबू ‘अब्दुल्लाह। *सहीह अल-बुख़ारी*, जिल्द 1। मिस्र: मكتबत ‘अब्द अल-हमिद अहमद हनफ़ी, 1896।

3. बुख़ारी, अबू ‘अब्दुल्लाह। *सहीह अल-बुख़ारी* [अरबी-अंग्रेज़ी], अनुवाद: मुहम्मद मुहसिन ख़ान। जिल्द 1। अल-मदीना अल-मुनव्वरा: इस्लामिक यूनिवर्सिटी, 1971।

4. हैकल, मुहम्मद हुसैन। *हयात-ए-मुहम्मद*। 5वाँ संस्करण। काहिरा: मكتबत अन-नह्दा अल-मिस्रिया, 1952।

5. हैकल, मुहम्मद हुसैन। *द लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद*। *हयात-ए-मुहम्मद* (8वाँ संस्करण) से अनूदित: इस्माईल राग़ी ए. अल-फ़ारूक़ी। नॉर्थ अमेरिकन ट्रस्ट पब्लिकेशन, 1976।

6. इब्न हिशाम, अबू मुहम्मद ‘अब्दुल-मलिक। *अस-सीरत अन-नबविय्या*। जिल्द 1। संपादन: ‘उमर ‘अब्दुस-सलाम तदमुरी। बैरूत: दार अल-किताब अल-अरबी, 1987।

7. इब्न इशाक़, मुहम्मद। *द लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद*। अंग्रेज़ी अनुवाद: अल्फ़्रेड गियोम। ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1955।

8. इब्न कसीर, इस्माईल अबू अल-फ़िदा’। *अल-बिदायह व अन-निहायह*। जिल्द 1, 2 और 3। संपादन: अहमद अबू मुस्लिम व अन्य। बैरूत: दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 1985।

9. इब्न कसीर, इस्माईल अबू अल-फ़िदा’। *अस-सीरत अन-नबविय्या*। जिल्द 1। संपादन: मुस्तफ़ा ‘अब्दुल-वाहिद। बैरूत: दार इह्या-ए-तुरास अल-अरबी, 1980।

10. मजलिसी, मुहम्मद बाक़िर। *बिहार अल-अनवार*। जिल्द 11, 15, 18 और 46। बैरूत: अल-वफ़ा’, 1983।

11. मजलिसी, मुहम्मद बाक़िर। *द लाइफ़ ऐंड रिलीजन ऑफ़ मुहम्मद*। *हयात-उल-क़ुलूब* (जिल्द 2) का अंग्रेज़ी अनुवाद: जेम्स एल. मेरिक। सैन एंटोनियो: ज़हरा ट्रस्ट, 1982।

12. मुदीर शानीची, काज़िम। *‘इल्म-उल-हदीस व दिरायत-उल-हदीस*। 3रा संस्करण। क़ुम: दफ़्तर इंतिशारात-ए-इस्लामी, 1990।

13. अल-मुर्तज़ा अल-'आमिली, अस-सैय्यद जाफ़र। *अस-सहीह मिन सीरत-ए-नबी-ए-अज़म*। 2रा संस्करण। जिल्द 1 और 2। क़ुम, 1983।

14. अल-मुर्तज़ा अल-'आमिली, अस-सैय्यद जाफ़र। *अस-सहीह मिन सीरत-ए-नबी-ए-अज़म*। तीसरे संस्करण की भूमिका (अप्रकाशित)। जुलाई 1993।

15. अल-मुर्तज़ा अल-'आमिली, अस-सैय्यद जाफ़र। *दिरासात व बुहूस फ़ी अत-तारीख़ वल-इस्लाम*। 2रा संस्करण। जिल्द 1। क़ुम, 1983।

16. अल-मुज़फ़्फ़र, एम. रज़ा। *द फ़ेथ ऑफ़ शिया इस्लाम*। 2रा संस्करण। क़ुम: अंसारियान पब्लिकेशन्स, 1986।

17. सुब्हानी, जाफ़र। *फ़ुरूग़-ए-अबादिय्यत*। जिल्द 1। क़ुम: दफ़्तर तबलीग़ात-ए-इस्लामी, 1993।

18. अत-तबरी, अबू जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर। *तारीख़ अर-रुसुल वल-मुलूक*। 5वाँ संस्करण। जिल्द 2। संपादन: मुहम्मद अबू अल-फ़ज़्ल इब्राहीम। काहिरा: दार अल-मआरिफ़, 1977।

19. तबर्सी, अबू 'अली अल-फ़ज़्ल बिन अल-हसन। *मज्मअ-उल-बयान फ़ी तफ़सीर-ए-क़ुरआन*। जिल्द 3 और 5। क़ुम: मکتबत आयतुल्लाह अल-मर'अशी, 1983।

20. वेसल्स, एंटोनी। *ए मॉडर्न अरेबिक बायोग्राफ़ी ऑफ़ मोहम्मद: ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ मुहम्मद हुसैन हैकल्स हयात-ए-मुहम्मद*। लाइडन: ई. जे. ब्रिल, 1972।

हाशिया (पाद-टिप्पणियाँ)

1. अल-मुज़फ़्फ़र, *द फ़ेथ ऑफ़ शिया इस्लाम*, दूसरा संस्करण (क़ुम: अंसारियान पब्लिकेशन्स, 1986), पृ. 17।

2. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 234।

3. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. ixxiii।

4. वही, पृ. 197; हैकल, *हयात*, पृ. 133। रिसालत की शुरुआत इन आयतों से हुई:
“अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम है—अपने रब के नाम से पढ़ो जिसने पैदा किया; जिसने इंसान को जमी हुई लहू की एक गांठ से पैदा किया; पढ़ो, और तुम्हारा रब सबसे ज़्यादा करीम है…” (क़ुरआन, 96: 1–3)।

5. इब्न हिशाम, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 263; हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 70; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 192 आदि।

6. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 70।

7. इब्न हिशाम, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 293; हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 70; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 197 आदि। अत-तबरी अपनी तारीख़ में रिसालत के समय नबी की उम्र के बारे में तीन क़ौल बयान करते हैं: एक के अनुसार चालीस साल, दूसरे के अनुसार तैंतालीस साल, और तीसरे के अनुसार बीस साल। देखें: अत-तबरी, *तारीख़*, जिल्द 2, पृ. 290–292।

8. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 73।

9. वही, पृ. 70; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, पृ. 192।

10. अत-तबरी, *तारीख़*, जिल्द 2, पृ. 293; मजलिसी, *बिहार*, जिल्द 15, पृ. 190; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 192।

11. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 192—हलबी, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 384; और मजलिसी, *बिहार*, जिल्द 18, पृ. 190 और 204 से उद्धृत।

12. क़ुरआन, 73: 5।

13. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 195।

14. इब्न हिशाम, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 267।

15. इब्न कसीर, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 387–388।

16. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 73।

17. वेसल्स, *बायोग्राफी*, पृ. 55।

18. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 74।

19. हैकल की *हयात* (पृ. 133, हाशिया #2) में इब्न कसीर द्वारा अबू नुऐम का हवाला दिया गया है। सही संदर्भ *अस-सीरत अन-नबविय्या* होना चाहिए, न कि *अल-कामिल फ़ी अत-तारीख़* (जो इब्न असीर की है)। यह लेखक या अनुवादक की त्रुटि प्रतीत होती है। वास्तव में यह उद्धरण इब्न कसीर की *सीरा*, जिल्द 1, पृ. 387–388 से है।

20. वही; *हयात*, पृ. 133, हाशिया।

21. देखें: बुख़ारी, *सहीह अल-बुख़ारी* (अल-मदीना: इस्लामिक यूनिवर्सिटी; अरबी–अंग्रेज़ी, अनुवाद: मुहम्मद मुहसिन ख़ान, 1971), जिल्द 1, पृ. 2–3, हदीस 3।

22. क़ुरआन, 96: 1–2।

23. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 197 और 223।

24. *हयात-ए-मुहम्मद* में हैकल ने अपने वर्णन के लिए किसी विशेष संदर्भ का उल्लेख नहीं किया; हाशिये में इब्न इशाक़ और सीरत की किताबों का हवाला दिया गया है। देखें: हैकल, *हयात*, पृ. 133, हाशिया #2।

25. वही, पृ. 74–75।

26. जाफ़र सुब्हानी—समकालीन शिया आलिम—क़ुम में महान आयतुल्लाहों (जिनमें मरहूम इमाम ख़ुमैनी भी शामिल) की निगरानी में शिक्षित; वर्तमान में क़ुम की हौज़ात में फ़िक़्ह, फ़लसफ़ा और कलाम के प्रोफ़ेसर। उनकी अनेक कृतियाँ हैं, जिनमें फ़ारसी में नबी की जीवनी पर *फ़ुरूग़-ए-अबादिय्यत* के दो विश्लेषणात्मक खंड शामिल हैं।

27. तुलना करें: सुब्हानी, *फ़ुरूग़-ए-अबादिय्यत*, 8वाँ संस्करण (क़ुम: ग्रीष्म 1993), जिल्द 1, पृ. 228; हैकल, *हयात*, पृ. 40।

28. वेसल्स, *बायोग्राफी*, पृ. 43।

29. वही, लेखक की दूसरी संस्करण की भूमिका, पृ. lxxii।

30. हैकल, *द लाइफ़*, पृ. 72।

31. वही, पृ. 73–75।

32. बुख़ारी, *सहीह* (अरबी–अंग्रेज़ी), जिल्द 1, पृ. 2–3।

33. क़ुरआन, 96: 1–3।

34. बुख़ारी, *सहीह* (अरबी–अंग्रेज़ी), जिल्द 1, पृ. 3–4।

35. यहाँ मुर्तज़ा इस क़िस्से का विश्लेषण एक पारंपरिक मुहद्दिस की हैसियत से करते हैं।

36. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 221—इब्न अबी अल-हदीद, *शरह*, जिल्द 4, पृ. 102; मजलिसी, *बिहार*, जिल्द 46, पृ. 143 से उद्धृत।

37. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 221—बैहक़ी, *अस-सुनन अल-कुब्रा*, प्रथम संस्करण (हैदराबाद दक्खन, हिंद: 1925), जिल्द 8, पृ. 165–166 से उद्धृत।

38. वही, पृ. 222।

39. वही, पृ. 222।

40. काज़िम मुदीर शानीची, *'इल्म अल-हदीस व दिरायत अल-हदीस*, 3रा संस्करण (क़ुम: दफ़्तर इंतिशारात-ए-इस्लामी, 1990), पृ. 160–161। लेखक बताते हैं कि अस-सुयूती ने मुरसल की प्रामाणिकता/अप्रामाणिकता पर दस मत बयान किए हैं।

41. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 222–223।

42. वही, पृ. 17–30।

43. वही, पृ. 225।

44. बुख़ारी, *सहीह* (अरबी–अंग्रेज़ी), जिल्द 1, पृ. 2–3।

45. इब्न इशाक़, *द लाइफ़*, पृ. 105।

46. वही; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 226—इब्न हिशाम, *अस-सीरा*, जिल्द 1, पृ. 264–265 से उद्धृत (यहाँ मुर्तज़ा विवरण में नहीं जाते)।

47. क़ुरआन, 16: 102।

48. वही, 25: 32।

49. वही, 6: 57।

50. वही, 12: 108; मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 226।

51. अधिक विवरण के लिए देखें: मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 226–233।

52. वही, पृ. 220 और 233; इब्न कसीर, *अल-बिदायह*, जिल्द 3, पृ. 13।

53. वही।

54. अबू 'अब्दुल्लाह जाफ़र बिन मुहम्मद—शिया के छठे इमाम, अल-सादिक़ (83–148/702–765)।

55. मुर्तज़ा, *अस-सहीह*, जिल्द 1, पृ. 223—मजलिसी, *बिहार*, जिल्द 18, पृ. 262 से उद्धृत।

56. वही—मजलिसी, *बिहार*, जिल्द 11, पृ. 59 से उद्धृत।

57. वही—अत-तबर्सी, *मज्मअ अल-बयान*, जिल्द 5, पृ. 384 से उद्धृत।

58. उदाहरणार्थ देखें: सुब्हानी, *फ़ुरूग़-ए-अबादिय्यत*, जिल्द 1, पृ. 213–237; रसूली, *तारीख़*, जिल्द 2, पृ. 189–236।

59. देखें: हैकल, *द लाइफ़*, पृ. xxiv—पहले संस्करण की भूमिका, अल-मराग़ी द्वारा, 15 फ़रवरी 1935।

60. मुज़फ़्फ़र, *द फ़ेथ*, पृ. 21–22।